Passion Reading in Hindi

प्रभु येसु का दुखभोग (लूकस 22:14- 23:56)

C: Commentator J: Jesus CR: Crowd M: Man W: Woman

C	संत लूकस के अनुसार प्रभु येसु ख्रीस्त का दुखभोग।
C	समय आने पर येसु प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठे और उन्होंने उन से कहा,
J	"मैं कितना चाहता था कि दुःख भोगने से पहले पास्का का यह भोजन तुम्हारे साथ करूँ; क्योंकि मैं तुम लोगों से कहता हूँ, जब तक यह ईश्वर के राज्य में पूर्ण न हो जाये, मैं इसे फिर नहीं खाऊँगा"।
C	इसके बाद येसु ने प्याला लिया, धन्यवाद की प्रार्थना पढ़ी और कहा,
J	"इसे ले लो और आपस में बाँट लो; क्योंकि मैं तुम लोगों से कहता हूँ, जब तक ईश्वर का राज्य न आये, मैं दाख का रस फिर नहीं पिऊँगा"।
C	उन्होंने रोटी ली और धन्यवाद की प्रार्थना पढ़ने के बाद उसे तोड़ा और यह कहते हुए शिष्यों को दिया,
J	"यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए दिया जा रहा है। यह मेरी स्मृति में किया करो"।
C	इसी तरह उन्होंने भोजन के बाद यह कहते हुए प्याला दिया,
J	"यह प्याला मेरे रक्त का नूतन विधान है। यह तुम्हारे लिए बहाया जा रहा है। देखो, मेरे विश्वासघाती का हाथ मेरे साथ मेज़ पर है। मानव पुत्र तो, जैसा लिखा है, चला जाता है; किन्तु धिक्कार उस मनुष्य को, जो उसे पकड़वाता है!'
C	वे एक दूसरे से पूछने लगे कि हम लोगों में कौन यह काम करने वाला है। उन में यह विवाद छिड़ गया कि हम में किस को सब से बड़ा समझा जाना चाहिए। येसु ने उन से कहा,
J	"संसार में राजा अपनी प्रजा पर निरंकुश शासन करते हैं और सत्ताधारी संरक्षक कहलाना चाहते हैं। परन्तु तुम लोगों में ऐसा नहीं है। जो तुम में बड़ा है, वह सब से छोटे-जैसा बने और जो अधिकारी है, वह सेवक-जैसा बने। आख़िर बड़ा कौन है - वह, जो मेज़ पर बैठता है अथवा वह, जो परोसता है? वहीं न, जो मेज़ पर बैठता है। परन्तु मैं तुम लोगों में सेवक-जैसा हूँ। "तुम लोग संकट के समय मेरा साथ देते रहे। मेरे पिता ने मुझे राज्य प्रदान किया है, इसलिए मैं तुम्हें यह वरदान देता हूँ कि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज़ पर खाओगे-पियोगे और सिंहासनों पर बैठ कर इस्राएल के बारह वंशों का न्याय करोगे। "सिमोन! सिमोन! शैतान को तुम लोगों को गेहूँ की तरह फटकने की अनुमति मिली है। परन्तु मैंने तुम्हारे लिए प्रार्थना की है, जिससे तुम्हारा विश्वास नष्ट न हो। जब तुम फिर सही रास्ते पर आ जाओगे, तो अपने भाइयों को भी सँभालोगे।"

C	पेत्रुस ने उन से कहा,
M	"प्रभु! मैं आपके साथ बन्दीगृह जाने और मरने को भी तैयार हूँ"।
C	किन्तु येसु के कहा,
J	"पेत्रुस! मैं तुम से कहता हूँ कि आज, मुर्गे के बाँग देने से पहले ही, तुम तीन बार यह अस्वीकार करोगे कि तुम मुझे जानते हो"।
C	येसु ने उन से कहा,
J	"जब मैंने तुम्हें थैली, झोली और जूतों के बिना भेजा तो क्या तुम्हें किसी बात की कमी हुई थी?"
C	उन्होंने उत्तर दिया,
CR	"किसी बात की नहीं"।
C	इस पर येसु ने कहा,
J	"परन्तु अब जिसके पास थैली है, वह उसे ले ले और अपनी झोली भी और जिसके पास नहीं है, वह अपना कपड़ा बेच कर तलवार ख़रीद ले; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि धर्मग्रन्थ का यह कथन मुझ में अवश्य पूरा होगा - उसकी गिनती कुकर्मियों में हुई। और जो कुछ मेरे विषय में लिखा है, वह पूरा होने को है।"
C	शिष्यों ने कहा,
CR	"प्रभु! देखिए, यहाँ दो तलवारें हैं"।
C	परन्तु येसु ने कहा,
J	"बस! बस!"
C	येसु बाहर निकल कर अपनी आदत के अनुसार जैतून पहाड़ गये। उनके शिष्य भी उनके साथ हो लिये। येसु ने वहाँ पहुँच कर उन से कहा,
J	"प्रार्थना करो, जिससे तुम परीक्षा में न पड़ो"।
C	तब वे पत्थर फेंकने की दूरी तक उन से अलग हो गये और घुटने टेक कर उन्होंने यह कहते हुए प्रार्थना की,
J	"पिता! यदि तू ऐसा चाहे, तो यह प्याला मुझ से हटा ले। फिर भी मेरी नहीं, बल्कि तेरी ही इच्छा पूरी हो।"
C	तब उन्हें स्वर्ग का एक दूत दिखाई पड़ा, जिसने उन को □ारस बँधाया। वे प्राणपीड़ा में पड़ने के कारण और भी एकाग्र हो कर प्रार्थना करते रहे और उनका पसीना रक्त की बूँदों की तरह धरती पर टपकता रहा। वे प्रार्थना से उठ कर अपने शिष्यों के पास आये और यह देख कर कि वे उदासी के कारण सो गये हैं, उन्होंने उन से कहा,
J	"तुम लोग क्यों सो रहे हो? उठो और प्रार्थना करो, जिससे तुम परीक्षा में न पड़ो।"
C	येसु यह कह ही रहे थे कि एक दल आ पहुँचा। यूदस, बारहों में से एक, उस दल का अगुआ था। उसने येसु के पास आ कर उनका चुम्बन किया। येसु ने उस से

	कहा,
J	"यूदस! क्या तुम चुम्बन दे कर मानव पुत्र के साथ विश्वासघात कर रहे हो?"
C	येसु के साथियों ने यह देख कर कि क्या होने वाला है, उन से कहा,
CR	"प्रभु! क्या हम तलवार चलायें?"
C	और उन में एक ने प्रधानयाजक के नौकर पर प्रहार किया और उसका दाहिना कान उड़ा दिया। किन्तु येसु ने कहा,
J	"रहने दो, बहुत हुआ",
C	और उसका कान छू कर उन्होंने उसे अच्छा कर दिया। जो महायाजक, मन्दिर-आरक्षी के नायक और नेता येसु को पकड़ने आये थे, उन से उन्होंने कहा,
J	"क्या तुम मुझ को डाकू समझ कर तलवारें और लाठियाँ ले कर निकले हो? मैं प्रतिदिन मन्दिर में तुम्हारे साथ रहा और तुमने मुझ पर हाथ नहीं डाला। परन्तु यह समय तुम्हारा है-अब अन्धकार का बोलबाला है।"
C	तब उन्होंने येसु को गिरफ़्तार कर लिया और उन्हें ले जा कर प्रधानयाजक के यहाँ पहुँचा दिया। पेत्रुस कुछ दूरी पर उनके पीछे-पीछे चला। लोग प्रांगण के बीच में आग जला कर उसके चारों ओर बैठ रहे थे। पेत्रुस भी उनके साथ बैठ गया। एक नौकरानी ने आग के प्रकाश में पेत्रुस को बैठा हुआ देखा और उस पर दृष्टि गड़ा कर कहा,
W	"यह भी उसी के साथ था"।
C	किन्तु उसने अस्वीकार करते हुए कहा,
M	"नहीं भई! मैं उसे नहीं जानता"।
C	थोड़ी देर बाद किसी दूसरे ने पेत्रुस को देख कर कहा,
M	"तुम भी उन्हीं लोगों में एक हो"।
C	पेत्रुस ने उत्तर दिया,
M	"नहीं भई! मैं नही हूँ"।
C	क़रीब घण्टे भर बाद किसी दूसरे ने दृढ़तापूर्वक कहा,
M	"निश्चय ही यह उसी के साथ था। यह भी तो गलीली है।"
C	पेत्रुस ने कहा,
M	"अरे भई! मैं नहीं समझता कि तुम क्या कह रहे हो"।
C	वह बोल ही रहा था कि उसी क्षण मुर्गे ने बाँग दी और प्रभु ने मुड़ कर पेत्रुस की ओर देखा। तब पेत्रुस को याद आया कि प्रभु ने उस से कहा था कि आज मुर्गे के बाँग देने से पहले ही तुम मुझे तीन बार अस्वीकार करोगे, और वह बाहर निकल कर फूट-फूट कर रोया। येसु पर पहरा देने वाले प्यादे उनका उपहास और उन पर अत्याचार करते थे। वे उनकी आँखों पर पट्टी बाँध कर उन से पूछते थे,
CR	"यदि तू नबी है, तो हमें बता-तुझे किसने मारा?"

C	वे उनका अपमान करते हुए उन से और बहुत-सी बातें कहते रहे। दिन निकलने पर जनता के नेता, महायाजक और शास्त्री एकत्र हो गये और उन्होंने येसु को अपनी महासभा में बुला कर उन से कहा,
CR	"यदि तुम मसीह हो, तो हमें बता दो"।
C	उन्होंने उत्तर दिया,
J	"यदि मैं आप लोगों से कहूँगा, तो आप विश्वास नहीं करेंगे और यदि मैं प्रश्न करूँगा, तो आप लोग उत्तर नहीं देंगे। परन्तु अब से मानव पुत्र सर्वशक्तिमान् ईश्वर के दाहिने विराजमान होगा।"
C	इस पर सब-के-सब बोल उठे,
CR	"तो क्या तुम ईश्वर के पुत्र हो?'
C	येसु ने उत्तर दिया,
J	"आप लोग ठीक ही कहते हैं। मैं वही हूँ।"
C	इस पर उन्होंने कहा,
CR	"हमें और गवाही की ज़रूरत ही क्या है? हमने तो स्वयं इसके मुँह से सुन लिया है।"
C	तब सारी सभा उठ खड़ी हो गयी और वे उन्हें पिलातुस के यहाँ ले गये। वे यह कहते हुए येसु पर अभियोग लगाने लगे,
CR	"हमें पता चला कि यह मनुष्य हमारी जनता में विद्रोह फैलाता है, कैसर को कर देने से लोगों को मना करता और अपने को मसीह, राजा कहता"।
C	पिलातुस ने येसु से यह प्रश्न किया,
M	"क्या तुम यहूदियों के राजा हो?"
C	येसु ने उत्तर दिया,
J	"आप ठीक ही कहते हैं"।
C	तब पिलातुस ने महायाजकों और भीड़ से कहा,
M	"मैं इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाता"।
C	उन्होंने यह कहते हुए आग्रह किया,
CR	"यह गलीलिया से लेकर यहाँ तक, यहूदिया के कोने-कोने में अपनी शिक्षा से जनता को उकसाता है"।
C	पिलातुस ने यह सुन कर पूछा कि क्या वह मनुष्य गलीली है और यह जान कर कि यह हेरोद के राज्य का है, उसने येसु को हेरोद के पास भेजा। वह भी उन दिनों येरुसालेम में था। हेरोद येसु को देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। वह बहुत समय से उन्हें देखना चाहता था, क्योंकि उसने येसु की चर्चा सुनी थी और उनका कोई चमत्कार देखने की आशा करता था। वह येसु से बहुत से प्रश्न करता रहा, परन्तु उन्होंने उसे उत्तर नहीं दिया। इस बीच महायाजक और शास्त्री ज़ोर-ज़ोर से येसु पर

	अभियोग लगाते रहे। तब हेरोद ने अपने सैनिकों के साथ येसु का अपमान तथा उपहास किया और उन्हें भड़कीला वस्त्र पहना कर पिलातुस के पास भेजा। उसी दिन हेरोद और पिलातुस मित्र बन गयें-पहले तो उन दोनों में शत्रुता थी। अब पिलातुस ने महायाजकों, शासकों और जनता को बुला कर उन से कहा,
M	"आप लोगों ने यह अभियोग लगा कर इस मनुष्य को मेरे सामने पेश किया कि यह जनता में विद्रोह फैलाता है। मैंने आपके सामने इसकी जाँच की; परन्तु आप इस मनुष्य पर जिन बातों का अभियोग लगाते हैं, उनके विषय में मैंने इस में कोई दोष नहीं पाया और हेरोद ने भी दोष नहीं पाया; क्योंकि उन्होंने इसे मेरे पास वापस भेजा है। आप देख रहे हैं कि इसने प्राणदण्ड के योग्य कोई अपराध नहीं किया है। इसलिए मैं इसे पिटवा कर छोड़ दूँगा।''
C	पर्व के अवसर पर पिलातुस को यहूदियों के लिए एक बन्दी रिहा करना था। वे सब-के-सब एक साथ चिल्ला उठे,
CR	"इसे ले जाइए, हमारे लिए बराब्बस को रिहा कीजिए।''
C	बराब्बस शहर में हुए विद्रोह के कारण तथा हत्या के अपराध में क़ैद किया गया था। पिलातुस ने येसु को मुक्त करने की इच्छा से लोगों को फिर समझाया, किन्तु वे चिल्लाते रहे,
CR	"इसे क्रूस दीजिए! इसे क्रूस कीजिए!''
C	पिलातुस ने तीसरी बार उन से कहा,
M	"क्यों? इस मनुष्य ने कौन-सा अपराध किया है? मैं इस में प्राणदण्ड के योग्य कोई दोष नहीं पाता। इसलिए मैं इसे पिटवा कर छोड़ दूँगा।'
C	परन्तु वे चिल्ला-चिल्ला कर आग्रह करते रहे कि इसे क्रूस दिया जाये और उनका कोलाहल बढ़ता जा रहा था। तब पिलातुस ने उनकी माँग पूरी करने का निश्चय किया। जो मनुष्य विद्रोह और हत्या के कारण क़ैद किया गया था और जिसे वे छुड़ाना चाहते थे, उसने उसी को रिहा किया और येसु को लोगों की इच्छा के अनुसार सैनिकों के हवाले कर दिया। जब वे येसु को ले जा रहे थे, तो उन्होंने देहात से आते हुए सिमोन नामक कुरेने निवासी को पकड़ा और उस पर क्रूस रख दिया, जिससे वह उसे येसु के पीछे-पीछे ले जाये। लोगों की भारी भीड़ उनके पीछे-पीछे चल रही थी। उन में नारियाँ भी थीं, जो अपनी छाती पीटते हुए उनके लिए विलाप कर रही थी। येसु ने उनकी ओर मुड़ कर कहा,
J	"येरुसालेम की बेटियो ! मेरे लिए मत रोओ। अपने लिए और अपने बच्चों के लिए रोओ, क्योंकि वे दिन आ रहे हैं, जब लोग कहेंगे-धन्य हैं वे स्त्रियाँ, जो बाँझ है; धन्य हैं वे गर्भ, जिन्होंने प्रसव नहीं किया और धन्य है वे स्तन, जिन्होंने दूध नहीं पिलाया! तब लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे-हम पर गिर पड़ों, और पहाड़ियों से-हमें □क लो; क्योंकि यदि हरी लकड़ी का हाल यह है, तो सूखी का क्या होगा?''

C	वे येसु साथ दो कुकर्मियों को भी प्राणदण्ड के लिए ले जा रहे थे। वे 'खोपड़ी की जगह' नामक स्थान पहुँचे। वहाँ उन्होंने येसु को और उन दो कुकर्मियों को भी क्रूस पर चढ़ाया-एक को उनके दायें और एक को उनके बायें। येसु ने कहा,
J	"पिता! इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं"।
C	तब उन्होंने उनके कपड़े के कई भाग किये और उनके लिए चिट्ठी निकाली। जनता खड़ी हो कर यह सब देख ही थी। नेता यह कहते हुए उनका उपहास करते थे,
CR	"इसने दूसरों को बचाया। यदि यह ईश्वर का मसीह और परमप्रिय है, तो अपने को बचाये।"
C	सैनिकों ने भी उनका उपहास किया। वे पास आ कर उन्हें खट्ठी अंगूरी देते हुए बोले,
CR	"यदि तू यहूदियों का राजा है, तो अपने को बचा"।
C	येसु के ऊपर लिखा हुआ था, "यह यहूदियों का राजा है"। क्रूस पर चढ़ाये हुए कुकर्मियों में एक इस प्रकार येसु की निन्दा करता था,
M	"तू मसीह है न? तो अपने को और हमें भी बचा।"
C	पर दूसरे ने उसे डाँट कर कहा,
M	"क्या तुझे ईश्वर का भी डर नहीं? तू भी तो वही दण्ड भोग रहा है। हमारा दण्ड न्यायसंगत है, क्योंकि हम अपनी करनी का फल भोग रहे हैं; पर इन्होंने कोई अपराध नहीं किया है।"
C	तब उसने कहा,
M	"येसु! जब आप अपने राज्य में आयेंगे, तो मुझे याद कीजिएगा"।
C	उन्होंने उस से कहा,
J	"मैं तुम से यह कहता हूँ कि तुम आज ही परलोक में मेरे साथ होगे"।
C	अब लगभग दोपहर हो रहा था। सूर्य के छिप जाने से तीसरे पहर तक सारे प्रदेश पर अँधेरा छाया रहा। मन्दिर का परदा बीच से फट कर दो टुकड़े हो गया। येसु ने ऊँचे स्वर से पुकार कर कहा,
J	"पिता! मैं अपनी आत्मा को तेरे हाथों सौंपता हूँ",
C	और यह कह कर उन्होंने प्राण त्याग दिये।
	(सब लोग कुछ समय मौन रहते हैं)
C	शतपति ने यह सब देख कर ईश्वर की स्तुति करते हुए कहा,
M	"निश्चित ही, यह मनुष्य धर्मात्मा था"।
C	बहुत-से लोग यह दृश्य देखने के लिए इकट्ठे हो गये थे। वे सब-के-सब इन घटनाओं को देख कर अपनी छाती पीटते हुए लौट गये। उनके सब परिचित और गलीलिया से उनके साथ आयी हुई नारियाँ कुछ दूरी पर से यह सब देख रहीं थीं।

	महासभा का यूसुफ़ नामक सदस्य निष्कपट और धार्मिक था। वह सभा की योजना और उसके षड्यन्त्र से सहमत नहीं हुआ था। वह यहूदियों के अरिमथिया नगर का निवासी था और ईश्वर के राज्य की प्रतीक्षा में था। उसने पिलातुस के पास जा कर येसु का शव माँगा। उसने शव को क्रूस से उतारा और छालटी के कफ़न में लपेट कर एक ऐसी क़ब्र में रख दिया, जो चट्टान में खुदी हुई थी और जिस में कभी किसी को नहीं रखा गया था। उस दिन शुक्रवार था और विश्राम का दिन आरम्भ हो रहा था। जो नारियाँ येसु के साथ गलीलिया से आयी थीं, उन्होंने यूसुफ़ के पीछे-पीछे चल कर क़ब्र को देखा और यह भी देखा कि येसु का शव किस तरह रखा गया है। लौट कर उन्होंने सुगन्धित द्रव्य तथा विलेपन तैयार किया और विश्राम के दिन नियम के अनुसार विश्राम किया।
C	यह प्रभु का सुसमाचार है।